Volume-6, Issue-1, January - 2017 • ISSN No 2277 - 8160 IF : 3.62 | IC Value 80.26

Original Research Paper History

प्रथम सिक्ख राज्य का संस्थापक : बंदा सिंह बहादुर

राखी पुनिया

एम.ए., नेट (इतिहास), पी.एच.डी. रिसर्च स्कॉलर, इतिहास, सिंघानिया विश्वविद्यालय, झुंझुनू (राजस्थान)

ABSTRACT बाबा बन्दा सिहँ बहादुर को लक्ष्मण देव, माधोदास व बंदा बैरागी आदि कई नामों से जाना जाता है। बंदा सिहँ ऐसे पहले सिक्ख नेता थे जिन्होंने मुगल शासकों के खिलाफ एक आक्रामक युद्ध छेड़ा और उनसे लोहा लिया। उन्होंने मुगलों के अजेय होने के भ्रम को तोड़ा। बंदा सिहँ बहादुर ने मुगल हाकिमों के जुल्मों का अंत करके प्रथम सिक्ख राज्य की स्थापना की। लोहगढ़ राजधानी का निर्माण किया। गुरू गोबिन्द सिहँ व गुरू नानक के नाम के सिक्के जारी किए। गुरू गोबिन्द सिहँ के निर्दोष बालकों को जीवित दीवार में चिनवाने वाले सरहिंद के सूबेदार वजीर खॉं को मारा। आर्थिक सुधारों के क्षेत्र में प्राचीन जमींदारी प्रथा का उन्मूलन किया तथा कृषकों को बड़े–बड़े जागीरदारों और जमींदारों के शोषण से मुक्ति दिलाई। बंदा सिहँ बहादुर केवल एक सेनापति ही नहीं अपितु एक कुशल राज्य प्रबंधक भी थे। सरहिंद की बजाय मुखलिसगढ़ को अपनी राजधानी के लिए चुनना उनकी सूझबूझ को दर्शाता है। वास्तव में बंदा सिहँ के नेतृत्व में ही सिक्ख, दोषियों को सजा दे सके और पंजाब व भारत के अन्य राज्य क्षेत्रों में स्वराज तथा खालसा राज की स्थापना कर सके।

KEYWORDS : बैरागी, हाकिम, सूबेदार, जमींदारी प्रथा, राज्य प्रबंधक

भूमिका

बंदा सिहँ बहादुर का जन्म अक्टूबर 1670 ई0 में कश्मीर स्थित पुंछ जिले के राजौरी नामक गॉंव में हुआ था। बंदा सिहँ का वास्तविक नाम लक्ष्मण देव था और वे राजपूत थे। उनके पिता रामदेव का मुख्य धंधा खेती–बाड़ी था। परिवार के साधन सीमित थे इसलिए उनकी पढाई की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया। अतः वह या तो अपने पिता का कृषि कार्य में हाथ बॅंटाते या फिर खाली समय में राजौरी के आसपास के जंगलों में शिकार पर निकल जाते। उन्हें घुडसवारी का व शिकार खेलने का बहुत शौक था। परन्तु आकस्मिक घटित एक घटना ने उनके जीवन में असाधारण परिवर्तन ला दिया। एक दिन उन्होंने एक हिरणी का शिकार किया, जो गर्भवती थी। उसके पेट में दो बच्चे थे जिन्हें लक्ष्मण देव ने तड़प–तड़प कर मरते देखा, इस दृश्य ने उनके हृदय में ऐसा परिवर्तन लाया कि उन्होंने शिकार करना छोड़ दिया। इस घटना से उनका मन अशांत रहने लगा व इस मानसिक भटकन से छुटकारा पाने के लिए वे जानकीप्रसाद नाम के एक साधु के शिष्य बन गए जिन्होंने उनका नाम माधोदास रखा। इसके बाद उन्होंने एक अन्य साधु रामदास का शिष्यत्व ग्रहण किया। परन्तु उनका मन शांत ना हो सका अतः रामदास को छोड़कर कुछ समय तक पंचवटी (नासिक) में रहे। यहॉं एक औघड़ नाथ नाम के योगी से योग की शिक्षा प्राप्त की। इस योगी की मृत्यु के बाद उन्होंने नांदेड़ में गोदावरी नदी के किनारे एक आश्रम बनाया और योग साधना करने लगे। माधोदास के रूप में उन्हें महान् प्रसिद्धि प्राप्त हुई और हजारों लोग उनके अनुयायी बन गए।

गुरु गोबिन्द सिंह से भेंट

1708 में नांदेड़ वास के दिनों में गुरू गोबिन्द सिहँ की भेंट माधोदास बैरागी से हुई थी। वह गुरू गोबिन्द सिंह के व्यक्तित्व से इतना अधिक प्रभावित हुआ कि सदा के लिए उनका शिष्य बन गया। यहीं पर गुरूजी ने उससे पूछा कि वह कौन है, वह बोला, ''मैं आप ही का बंदा अर्थात दास हूॅं।'' और तभी से वह बंदा सिहँ कहा जाने लगा। गुरू गोबिन्द सिहँ ने बंदा सिहँ को एक नगारा, एक निशान और अपने तरकस में से 5 तीर देकर सिक्खों का नेता नियुक्त किया और पंजाब जाकर मुगलों से युद्ध जारी रखने का निर्देश दिया। साथ ही गुरूजी ने सिक्खों के नाम हुक्मनामें भी जारी किए कि वे बंदा बहादुर को अपना नेता माने तथा इस संघर्ष में उसकी सहायता करें। गुरू गोबिन्द सिहँ ने बंदा सिहँ के साथ पॉंच सिक्ख बाबा विनोद सिहँ, रामसिहँ, काहन सिहँ, बाज सिहँ व दया सिहँ को सलाहकार के तौर पर भेजा। इसके अतिरिक्त बीस और सिक्ख भी बंदा सिहँ के साथ भेजे गए।

ये नए सिक्ख राज्य के पॉंच प्रतीक थे।

- तीर कवच का प्रतीक
- नगारा खालसा की जीत का प्रतीक
- निशान सिक्ख राष्ट्रीयता का प्रतीक
- पॉंच सिक्ख सलाहकार सिक्ख राज्य की लोकतांत्रिक प्रकृति का प्रतीक
- पच्चीस सिक्ख सेना का प्रतीक

बंदा सिंह द्वारा लड़े गए युद्ध

दक्षिण भारत से बड़ी तेजी से सफर करते हुए बन्दा सिहँ अपने साथियों के साथ देहली प्रान्त की सीमा पर पहुॅंचा तो उसे पता चला कि गुरू गोबिन्द सिहँ की हत्या हो चुकी है। यहॉं उन्होंने अपनी कूच करने की रफ्तार जरा ढीली कर दी एवं दिल्ली के पास ही अपना डेरा डाला और गुरू गोबिन्द सिहँ का संदेश सिक्खों तक पहुॅंचाया। उसने सिक्खों से अपील की कि वे मुगल हूकूमत और सरहिंद के सुबेदार वजीर खॉं व सुच्चानन्द जैसे लोगों के अत्याचारों को मिटाने में संगठित होकर उसका सहयोग करें। इस प्रकार अनेक सिक्ख बन्दा सिंह के नेतृत्व में इक्ट्ठे हो गए। जिससे बंदा सिहँ की शक्ति काफी बढ़ गई।

सोनीपत की लड़ाई : बंदा सिहँ की सैनिक विजय सोनीपत से आरम्भ हुई। 500 सिक्खों के जत्थे ने सोनीपत पर आक्रमण कर दिया। सिक्खों की संख्या बहुत कम थी पर पहले ही हमले में सोनीपत पर सिक्खों का अधिकार हो गया और सोनीपत का फौजदार दिल्ली की तरफ भाग गया।

कैथल की लड़ाई : अपने सैनिक अभियानों के लिए बंदा सिहँ को धन की जरूरत थी। इसलिए बंदा सिहँ के नेतृत्व में सिक्खों ने शाही खजाने की एक बड़ी राशि जो दिल्ली ले जाई जा रही थी उसे भूणे गांव के पास लूट लिया। कैथल का हिन्दू आमिल अपने सभी सैनिकों के साथ मौके पर पहुॅंचा पर सिक्खों ने उसकी फौज को हराकर उसे गिरफ्तार कर लिया। लेकिन बाद में सभी घोड़े और हथियार लेकर उसे रिहा कर दिया गया और अपनी तरफ से उसे कैथल का आमिल भी नियुक्त कर दिया।

समाना की लड़ाई : इसके बाद बंदा सिहँ बहादुर ने समाना पर चढ़ाई के लिये कूच किया। समाना का हाकिम सैयद जलालुद्दीन था जिसने गुरू तेगबहादुर का कत्ल कराने में विशेष भूमिका निभायी थी। तथा गुरू बालकों का कत्ल करने वाले खासलबेग और बासलबेग भी यहीं के थे। बन्दा सिहँ के नेतृत्व में सिक्ख सेना ने 11 नवम्बर 1709 को प्रातः काल ही समाना पर चढ़ाई कर दी और जाते ही कामयाबी हासिल कर ली। समाना की विजय से सिक्खों के हाथ में बहुत सा धन आ गया जिससे उनकी शक्ति काफी बढ़ गई।

कपूरी की लड़ाई : समाना की विजय के बाद सिक्ख सेना सीधे घुरम्म, शाहबाद, मुस्तफाबाद को लूटते हुए कपूरी पहुॅंची। कपूरी का हाकिम कद्मुद्दीन बहुत ही दुराचारी प्रवृति का था। उसने अनेक हिन्दु स्त्रियों के सतीत्व को नष्ट किया था। जब बन्दा सिहँ के पास उसके दुराचार का संदेश पहुॅंचा तो उसने कद्मुद्दीन के दुराचार के महलों में आग लगा दी और उसके द्वारा संग्रह किया गया धन लूट लिया।

सढ़ौरा की लड़ाई : कपूरी के बाद सिक्खों ने सढ़ोरा पर आक्रमण कर दिया। यहॉं का हाकिम उस्मान खान बहुत बड़ा अत्याचारी था। वह हिन्दुओं को अपना कट्टर शत्रु समझता था। उसने हिन्दुओं को अपने मुर्दे तक जलाने की आज्ञा नहीं दी तथा मुस्लिम संत सैयद बदरूद्दीन शाह को केवल इस कारण मरवा दिया कि उसने भंगानी के युद्ध में गुरू गोबिंद की सहायता की। सढ़ोरा के लोग बदरूद्दीन शाह के अत्याचारों से बहुत परेशान थे। अतः वे भी सिक्खों के साथ मिल गए। सढ़ोरा जीतते हुए बंदा

सिहँ बहादुर ने सरहिन्द की ओर कूच किया।

ljfgUn dh yMkbZ % यही वह स्थान था जहाँ गुरू गोबिन्द सिहँ के दो बालकों को जीवित दीवार में चिनवाया गया और यह कार्य सूबेदार वजीर खां तथा सुच्चानन्द के नेतृत्व में हुआ था। इसीलिए इस युद्ध में भाग लेने के लिए प्रत्येक सिक्ख क्रोध की अग्नि में तप रहा था। नगर के समीप पहुँचते ही सिक्ख सेना का सामना सूबेदार वजीर खाँ के नेतृत्व में एक बहुत बड़ी सेना के साथ हुआ। उनके पास तोपें, हाथी थे तो दूसरी तरफ बंदा सिहँ के पास न ही पर्याप्त संख्या में घोड़े थे और ना ही हथियार, किन्तु सिक्ख बदले की भावना से लड़ रहे थे और अंत में जीत भी उन्हीं की हुई।

इस युद्ध में वजीर खाँ मारा गया। उसके मरते ही मुस्लिम सेनाओं का मनोबल टूट गया। दीवान सुच्चानन्द को जीवित पकड़ा गया तथा उसे कई प्रकार की यातनाएँ दी गई। सरहिन्द का युद्ध अति भयानक था। सिक्खों ने नगर में प्रविष्ट होकर उसे लूटा और जला डाला। हजारों मुसलमानों को भी मारा गया। सूबेदार वजीर खाँ ने सरहिंद के गैर–मुसलमानों का इतना शोषण किया कि मौका मिलते ही उन्होंने इसका पूरा बदला लिया। इबरतनामा में मुहम्मद कासिम ने लिखा है कि ''पिछले खाने के समय ऐसा कोई भी अत्याचार नहीं था जो असहाय जनता के साथ न किया गया हो और ऐसा कोई भी बीज न बचा जो उसेने बोया था और जिसका फल उसे न मिला हो''।

मुगलों से बदला लेने के बाद बंदा सिहँ ने अपनी सेनाएं पहाड़ी राजाओं के विरूद्ध मोड़ दी। यमुना से सतलुज तक सारा क्षेत्र बंदा के प्रभाव में आ गया। इस प्रकार बंदा सिहँ को बहुत अधिक प्रसिद्धि प्राप्त हुई और उसके प्रभाव से बहुत से लोगों ने धर्म परिवर्तन किया तथा हिन्दु भी सिक्ख बन गए।

lgkjuiqj dh fot; % सहारनपुर के गुर्जर किसानों का वहाँ के नवाबों व जमींदारों द्वारा शोषण किया जा रहा था। जब से ये संदेश बन्दा सिहँ को मिला तो उसने सहारनपुर की ओर कूच किया।

सिक्खों ने सहारनपुर पर अधिकार कर लिया तथा इसका नाम बदलकर भाग नगर रख दिया गया। परन्तु जालंधर के किसानों का संदेश मिलने पर बंदा सिहँ बीच में ही पंजाब लौट गया।

xq:nkl&ukxy dk ;q) % 1712 में बहादुरशाह की मृत्यु के बाद उनके पुत्रों में उत्तराधिकार का युद्ध आरम्भ हो गया। बंदा सिहँ ने इस अवसर का फायदा उठाया और कलानौर, बटाला, लौहगढ़ व सढ़ोरा पर कब्जा कर लिया। नए बादशाह फरूखसियार ने लाहौर के गवर्नर को बंदा की शक्ति निःशेष कर देने का आदेश दिया। पंजाब की सभी सेनाएं उसके विरूद्ध झौंक दी गई। अतः बंदा सिहँ को गुरूदास नांगल में आश्रय लेना पड़ा। और यहाँ एक गढ़ीनुमा किले में अपनी छावनी डाली। आस–पास सुरक्षा की दृष्टि से एक खाई खोदी और उसे नहर से पानी काटकर भर दिया गया। पर मुगलों की सेना ने बंदा व सिक्ख सेनाओं को चारों ओर से घेर लिया था। कई तरह के कष्टों को सहते हुए सिक्खों ने मुगलों का आठ महीने तक तो सामना किया। परन्तु 1715 को मुगल सेना ने गढ़ी पर कब्जा कर लिया और अधिकतर सिक्खों को गढ़ी में ही कत्ल कर दिया गया। तथा जो बचे हुए सिक्ख थे उन्हें बंदा सिहँ के साथ दिल्ली लाया गया। यहाँ हर दिन सौ–सौ सिक्खों की हत्या की जाती। बंदा सिहँ को भयानक यातनाओं के साथ सबसे अन्त में 1716 में मारा गया।

iFke flD[k jkT;

बंदा सिहँ बहादुर ने गुरू गोबिन्द सिहँ के सपने को पूरा किया और प्रथम सिक्ख राज्य की स्थापना की।

jkt/kkuh % सरहिंद एक महत्वपूर्ण केन्द्रीय क्षेत्र था, जहाँ से सिक्ख चारों ओर से हमला कर सकते थे। परन्तु बंदा सिहँ ने मुखलिसगढ़ को अधिक उपयुक्त माना क्योंकि यह हिमालय की श्रेणियों के बीच ऊँचे–नीचे टीलों व खड्डों से घिरा था जिस तक पहुँचना बहुत कठिन था। इस लिए बंदा सिहँ ने मुखलिसगढ़ के किले की मरम्मत करवा के इसका नाम 'लौहगढ़' रखा और इसे अपनी राजधानी बनाया। लौहगढ़ के किले में ही बंदा सिहँ ने सभी धन–सम्पत्ति, लूट व अस्त्र–शस्त्र का भण्डार रखा।

'kklu % बंदा सिहँ बहादुर ने पहले सिक्ख राज्य की स्थापना की। वह एक विशाल क्षेत्र का राजा बना। वहाँ पर उसने शाही महल आदि का निर्माण करवाया। नियमित रूप से दरबार लगाना शुरू किया। बड़ी संख्या में सेना रखी। बंदा सिहँ ने अपने राज्य को सरहिंद, समाना व थानेश्वर के तीन प्रांतों में विभाजित किया तथा इसमें बाज सिहँ, फतह सिहँ व रामसिहँ को सूबेदार नियुक्त किया। गंडा सिहँ के अनुसार 'बंदा सिहँ वास्तव में नाम के अतिरिक्त एक राजा के समान ही था। उसने बहुत से क्षेत्रों को जीता और उन पर नायब के द्वारा शासन किया। उसके पास बड़ी संख्या में सेना व अनुयायी भी थे।' खुशवंत सिहँ के अनुसार 'उसका तीसरा अवतार पादशाह के रूप में हुआ।'

flDdk % बंदा बहादुर ने गुरू नानक व गुरू गोबिन्द सिहँ के नाम के सिक्के जारी किए। सिक्कों के एक तरफ फारसी में यह अंकित था :

''सिक्का ज़दबर हर दो आलम तेगि नानक वाहिब अस्त।
फतेह गोबिन्द सिहँ शाह–ए–शाहन फज़ल ए सचा साहिब अस्त।।''

दो जहानों के लिए ये सिक्के गुरू नानक की तलवार व सच्चे राजा गुरू गोबिन्द सिहँ जी की कृपा से मिली जीत के उपलक्ष्य में जारी किए गए थे।

सिक्के के दूसरी तरफ ये शिलालेख अंकित था :

''ज़र्ब बा अमन उद–दहर–मसवरत सहर
जीनत–उल–तख्त–ऐ–मुबारक बख्त।।''

इसका अर्थ है, संसार के शांति स्थल, दुनिया की शरण, भाग्यशाली राजधानी से जारी हुआ।

egj % शाही फरमान जारी करने के लिए मुहर जारी की गई जिस पर फारसी में लिखा था :

''देग–ओ–तेग–ओ–फतह ओ
नसरत–ए–बेदरंग
यफ्त आज़ नानक गुरू गोबिन्द सिहँ।''

यानि देग, तेग, फतेह व सेवा गुरू नानक तथा गुरू गोबिन्द सिहँ की कृपा से प्राप्त हुई है।

lor % गंडा सिहँ के अनुसार सरहिन्द की विजय के अवसर पर बंदा बहादुर ने एक नया संवत भी आरम्भ किया। इसके द्वारा वे सिक्खों के मन में शासक वर्ग के साथ एक समानता की भावना लाना चाहते थे ताकि सिक्ख किसी भी तरह अपने आप को उनसे कम न समझें।

आर्थिक क्षेत्र मे बंदा सिहँ बहादुर ने अति प्राचीन जमींदारी प्रथा का अन्त किया तथा कृषकों को बड़–बड़े जमींदारों व जागीरदारों के अत्याचारों से मुक्त कराया। ये जमींदार कृषकों का अनेक प्रकार से शोषण करते, इनके साथ पशुओं की तरह व्यवहार किया जाता। लेकिन बंदा सिहँ ने जमीन वास्तविक मालिकों में बाँट दी। किसानों को अब जमीन पर मालिकाना अधिकार मिले जिससे उन पर होने वाले शोषण का अंत हुआ।

fu"d"k

बंदा सिहँ बहादुर ही पहले ऐसे सिक्ख नेता थे जिन्होंने मुगल शासकों के खिलाफ एक आक्रामक युद्ध छेड़ा और उनके अजेय होने के भ्रम को तोड़ा। बंदा सिहँ ने मुगल हाकिमों के जुल्मों का अंत किया तथा जनता को उनके अत्याचारों से मुक्ति दिलाई। वास्तव में बन्दा सिहँ बहादुर ने ही प्रथम सिक्ख राज्य की स्थापना की। उन्हीं के नेतृत्व में सिक्ख, अत्याचारियों को सजा दे सके तथा पंजाब व भारत के अन्य राज्य क्षेत्रों में स्वराज और खालसा राज की स्थापना कर सकें।

lUnHk xUFk lph

1. ठाकुर देशराज, सिख इतिहास
2. तेजा सिहँ, सिक्ख इतिहास की झांकियाँ (तृतीय भाग)
3. हरीशचन्द्र वर्मा, मध्यकालीन भारत, भाग – 2 (1540 – 1761)
4. वी.डी. महाजन, मध्यकालीन भारत (1000 ई. से 1761 ई. तक)
5. Kartar Singh and Gurdial Singh Dhillon, Stories from Sikh History, Book – V (The Sikh Martys)
6. Kartar Singh and Gurdial Singh Dhillon, Stories from Sikh History, Book – VI (Banda Singh Bahadur and Rise of the Sikhs)
7. Harbans Kaur Sagoo, Banda Singh Bahadur and Sikh Sovereignty
8. Ganda Singh, Life of Banda Singh Bahadur based on Contemporary and Originial Records
9. Sohan Singh, Life and Exploits of Banda Singh Bahadur
10. Dr. Sukhdial Singh, Banda Singh Bahadur on the canvas of history
11. Dr. Gopal Singh, A History of the Sikh people (1469-1988)

12. Dr. Raj Pal Singh, The Sikhs their Journey of Five Hundred years.
13. Bhagat Singh, Sikh Polity in the Eighteenth and Nineteenth Centuries
14. Khushwant Singh, A History of the Sikhs, Volume I : 1469 - 1839
15. Pritam Singh Gill, History of Sikh Nation
16. Harish Dhillon, The Legend of Banda Bahadur